सरल-सन्ध्योपासना

प्रो० सुधाकर एम. ए.

शारदा मन्दिर

नई सड़क — देहली

द्वितीयावृत्ति] [मूल्य ।)

ॐ

सरल सन्ध्या

उपदेश

पाठको ! तुमने संध्या का नाम सुना होगा और अपने माता पिता आदि को सन्ध्या करते हुए देखा होगा। प्रातःकाल व सायंकाल दोनों समय ईश्वर का अच्छे प्रकार से ध्यान करने का नाम सन्ध्या है। हमारे शास्त्रों में सन्ध्या की बड़ी महिमा बताई गई है। हम अपने इतिहास में पढ़ते हैं कि हमारे पूर्वज भक्तिपूर्वक संध्या किया करते थे। श्री रामचन्द्रजी और श्री कृष्णचन्द्रजी जिनका हम सब बड़ा आदर करते हैं, वे भी दोनों समय संध्या करने का नियम पालन करते थे। जिस समय श्री हनुमान माता सीता की खोज में लंका पहुँचे, उस समय उनके मन मे यह विचार आया कि माता सीता सन्ध्या करने

के लिए नदी के किनारे अवश्य पहुंचेंगी, इसलिए वे नदी के किनारे पहुँचे और सन्ध्या के समय माता सीता के दर्शन किए। महाभारत में लिखा है कि एक बार श्री कृष्णचन्द्रजी को अपने रथ में जाते जाते शाम हो गई, उन्होंने अपने रथ को रोक लिया और रथ से उतर कर जंगल में ही सन्ध्या करने के नियम का पालन किया।

हमारे शास्त्रों ने सन्ध्या करने पर इसलिए ज़ोर दिया है कि सन्ध्या करने से चित्त को शान्ति मिलती है, मन में अच्छे विचार पैदा होते हैं, शरीर को बलिष्ठ बनाने का उपदेश मिलता है, हम पापों से बचते हैं, ईश्वर की अद्भुत लीला और उसके अटल नियमों की ओर हमारा ध्यान जाता है। हमें ऐसा अनुभव होने लगता है कि प्रभु सब दिशाओं में हमारी रक्षा कर रहे हैं। इसलिए हमें किसी से भी लड़ने–झगड़ने की आवश्यकता नहीं। संध्या करने से बुद्धि उज्ज्वल होती है, हृदय उदार बनता है शुभ कामनाएँ और शुभ संकल्प पैदा होते हैं और अन्त मे हम इन सब के द्वारा प्रभु-दर्शन के अधिकारी बन जाते हैं।

सन्ध्या किस प्रकार करनी चाहिये

सन्ध्या दो प्रकार से की जाती है, एकान्त में अथवा दूसरों के साथ मिलकर। जब आप एकान्त में सन्ध्या करने बैठें तो घर में अथवा बाहर स्वच्छ, शान्त और रमणीक स्थान ढूंढें, जहाँ पर शोर न हो रहा हो। ऐसे स्थान पर सन्ध्या का आसन बिछा कर एक जल का पात्र पास रक्खें, तीन बार जल से आचमन कर इन्द्रिय—स्पर्श मन्त्रों से अपने अङ्गों पर जल छिड़कें और सावधान होकर सन्ध्या के मन्त्रों को अर्थ सहित विचारें और प्रभु भक्ति का आनन्द लूटें। जब आप दूसरों के साथ मिलकर सन्ध्या करने बैठें तो चंचलता और हँसी मज़ाक को छोड़, शान्त होकर बैठें। अपने उच्चारण पर विशेष ध्यान रक्खें और मन्त्रों को सबके साथ एक स्वर से बोलें। मन्त्रों को आगे पीछे अथवा अधिक ऊँचा नीचा बोलने से सन्ध्या का आनन्द बिगड़ जाता है। मन्त्र बोलते समय प्रभु की ओर ही ध्यान लगाना चाहिये।

अब हम आप लोगों को सन्ध्या करने में सहायता देने

के लिए सन्ध्या के मन्त्र, उनके सरल अर्थ और उनसे ग्रहण करने योग्य उपदेशों को लिखते हैं।

आचमन मंत्र

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ (यजुर्वेद अ० ३६ मं० १२)

भावार्थ—सर्वव्यापक ईश्वर हमारी सब उत्तम इच्छाओं को पूरी करे और हम पर सदा सुख की वर्षा करता रहे।

उपदेश

पाठको! ईश्वर सब जगह मौजूद है। वह हमारे माता-पिता के समान हमारी रक्षा कर रहा है, जब हम उससे प्रार्थना करें, तो उससे सदा उत्तम भावनाओं की याचना करें, जैसे अच्छा बनना, दूसरों की सेवा करना, माता पिता की आज्ञा मानना, बड़ों का सत्कार करना, सच बोलना इत्यादि। इस प्रकार की प्रार्थना करने वाले मनुष्यों पर ही ईश्वर सदा सुख की वर्षा किया करता है। जैसी आप प्रार्थना करेंगे ईश्वर आपको वैसा ही बना देगा, यह बात सदा ध्यान में रक्खें।

इन्द्रियस्पर्श मंत्र

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः।
ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रं श्रोत्रं।
ओं नाभिः। ओं हृदयम्।
ओं कण्ठः। ओं शिरः।
ओं बाहुभ्याम् यशोबलम्।
ओं करतलकरपृष्ठे॥

भावार्थ—हे प्रभो! हमारी वाणी, प्राण, आँख, कान, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर और भुजाओं को बलवान और पवित्र बनाइये। हम इन इन्द्रियों से सदा ऐसे काम करें जिनसे हमरा यश बढ़े।

उपदेश

पाठको! हमारे शरीर की रचना हमारी इन्द्रियों से हुई है, इनका एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। ये सब मिलकर शरीर की एकता को बना रही हैं। आप इस मन्त्र में बतलाई हुई इन्द्रियों पर विचार करें, यदि आपकी आँख, नाक, कान आदि किसी एक इन्द्रिय में पीड़ा होती है तो सारा शरीर दुःखी हो जाता है इसलिये इनको सदा

बलवान् और पवित्र बनाने की ज़रूरत है, ऐसा करने पर ही आपका यश संसार में बढ़ सकता है।

मार्जन मंत्र

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः ।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये ।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः ।
ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि ।
ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

भावार्थ—हे जगदीश ! आप मेरे शिर, नेत्र और कण्ठ को पवित्र कीजिये तथा मेरे हृदय, नाभि और पैरों को भी पवित्र बनाइये। यही नहीं किन्तु मेरे सब अंगों को बलवान और पवित्र रखने की कृपा कीजिये ।

उपदेश

पाठको ! मार्जन मन्त्रों में इन्द्रियों को पवित्र रखने के साधन बतलाये गये हैं। सिर की पवित्रता, ईश्वर-विश्वास, सत्याचरण तथा शुद्ध वायु के सेवन से होती है। आँखों की पवित्रता रखने के लिए हमें किसी को बुरी दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। कण्ठ की शोभा मीठा

बोलने और भगवान् के भजन में मीठे गीत गाने से है। हृदय ऊँचे विचारों से पवित्र होता है। नाभि के पवित्र रखने के लिए ब्रह्मचारी बनना ज़रूरी है। पैरों की पवित्रता दूसरों की सेवा में लगे रहने से होती है तथा सारे शरीर की पवित्रता प्रभु-भक्ति से ही प्राप्त होती है।

प्राणायाम मंत्र

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः।
ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।

भावार्थ—ईश्वर प्राणस्वरूप है। ईश्वर दुःखनाशक है। ईश्वर सुखस्वरूप है। ईश्वर महान् है। ईश्वर सबका जन्म-दाता है। ईश्वर ज्ञानस्वरूप है। ईश्वर सत्यस्वरूप है।

उपदेश

पाठको! इस मन्त्र में ईश्वर के गुणों का वर्णन किया गया है। इन गुणों का चिन्तन करें और स्वयं भी ऐसा ही बनने का प्रयत्न करें। इस मन्त्र को प्राणायाम अर्थात् प्राणों की कसरत करते हुए पढ़ा जाता है। आप अपने किसी महात्मा से पूछें कि प्राणायाम कैसे किया जाता है। शरीर को दृढ़ और बलवान् बनाने

में प्राणायाम बड़ी सहायता देता है, इसके करने से हमारी आयु और बुद्धि बढ़ती है।

अघमर्षण मन्त्र

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत, ततः समुद्रो ऽर्णवः॥
ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो ऽजायत।
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी॥
ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

भावार्थ—सब ज्ञानों के भण्डार, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हम सबके कल्याण के लिए वेदों और इस संसार के पदार्थों को बनाया है, वही इस सृष्टि की आयु समाप्त होने पर प्रलय करता है और फिर से पूर्ववत सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि बड़े-बड़े लोक लोकान्तरों को नियम पूर्वक बनाता है जिसके पश्चात यह दिन और रात्रि का चक्र चलना शुरू हो जाता है।

उपदेश

पाठको! अघमर्षण का अर्थ पापों से बचना है। इन मन्त्रों में बतलाया गया है कि ईश्वर के नियम बड़े

अटल हैं। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पृथ्वी, समुद्रादि हमेशा उसके अटल नियमों में चलते आये हैं। इसलिए हमें भी उसके नियमों में चलना चाहिये और उसके किसी नियम को भंग न करना चाहिये। हम चाहे कितने ही बड़े विद्वान, बलवान् और धनवान् क्यों न हों, ईश्वर हमको नियम भंग का दंड अवश्य देगा। इस प्रकार जो मनुष्य विचार करता हुआ उत्तम कर्म करता है वह मनुष्य आगे होने वाले पापों से अवश्य बच सकता है।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो
रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधि-
पतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं
वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

भावार्थ—हे ईश्वर ! आप पूर्व दिशा में मौजूद हैं और सूर्य के प्रकाश और ताप द्वारा जीवन की रक्षा करते हैं। आप स्वतन्त्र हैं और अपने भक्तों को भी दुःख के बन्धन से बचाते हैं। आपके इन सब गुणों के लिए बारम्बार नमस्कार है। जो हम से लड़ता है अथवा

जिससे हम लड़ते हैं उसे हम आपके न्याय पर ही छोड़ देते हैं।

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमो०.........।

भावार्थ—हे ईश्वर! आप दक्षिण दिशा में मौजूद हैं आप विद्वानों द्वारा हमें टेढ़ी चालों से बचाते हैं। आपके इन सब गुणों के लिए..............।

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिता ऽन्नमिषवः। तेभ्यो नमो०.........॥

भावार्थ—हे ईश्वर आप पश्चिम दिशा में मौजूद हैं। आप सर्वश्रेष्ठ हैं। ज़हरीले प्राणियों से हमें बचाते हैं और अन्न द्वारा हमारी रक्षा करते है। आपके इन सब गुणों के लिये..............।

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता ऽशनिरिषवः। तेभ्यो नमो०.........।

भावार्थ—हे ईश्वर! आप उत्तर दिशा में मौजूद हैं। आप शांति के सागर हैं। जन्म-मरण से रहित हैं। आपके प्रेम और भक्ति की विद्युत अर्थात आकर्षण शक्ति हमें बुराइयों से बचाती है। आपके इन सब गुणों के लिये...........।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो
रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमो०...........।

भावार्थ—आप नीचे की दिशा में मौजूद हैं। सर्वत्र व्यापक हैं। हरे भरे वृक्षों और फल फूलों से हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके इन सब गुणों के लिये......।

ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो
रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमो० ....।

भावार्थ—आप ऊपर की दिशा में भी मौजूद हैं। हमारे बड़ों के भी स्वामी हैं, शुद्धस्वरूप हैं और वर्षा द्वारा हमारे जीवन की रक्षा करते हैं। आपके इन सब गुणों के लिए.........।

उपदेश

पाठको! मनसा परिक्रमा के अर्थ हैं, मन के द्वारा ईश्वर की महिमा का अनुभव करना। इन ६ मन्त्रों से आपने समझ लिया होगा कि ईश्वर सब दिशाओं में मौजूद है और वह हमारी सब जगह सूर्य, विद्वानों, अन्नादि द्वारा सब तरह से रक्षा कर रहा है। इसलिए हमें हमेशा ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये और उसकी तरह जहाँ तक हो सके दूसरों की रक्षा करनी चाहिए तथा किसी से व्यर्थ लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए।

उपस्थान मंत्र

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म् ज्योतिरुत्तमम् ।

भावार्थ—हे ईश्वर! हम अविद्या अन्धकार से दूर होवें। आपके सुख स्वरूप को देखते हुए अपने चरित्र को बहुत ऊँचा बनावें और अन्त में आपकी परमज्योति को प्राप्त कर लें।

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति
केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

भावार्थ—हे ईश्वर आप वेद रूपी ज्ञान के देने वाले हैं, आप के ही दर्शन के लिए संसार के सब पदार्थ रंग बिरंगी झण्डियों का काम दे रहे हैं।

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मि-
त्रस्य वरुणस्याग्नेः आ प्रा द्यावा पृथिवी
अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा
जगतस् तस्थुषश्च स्वाहा ॥

भावार्थ—हे ईश्वर! आप विद्वानों में अनुपम और श्रेष्ठ हैं, सब के प्रति मैत्री भाव रखने वाले सर्वगुण सम्पन्न और तेजस्वी विद्वानों के भी आप नेता हैं। पृथिवी, सूर्यादि

लोकों को आप धारण कर रहे हैं। चर अचर जगत के आप स्वामी हैं। हे प्रभो ! हम आपको प्राप्त होवें।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ।
शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शत-
मदीनाः स्याम शरदः शतं,
भूयश्च शरदः शतात् ॥

भावार्थ—हे सब को देखने वाले, शुद्ध स्वरूप परमात्मन् ! आप सदा से विद्वानों और जगत के प्राणियों का कल्याण करते हैं। हे प्रभो ! हम आप की कृपा से सौ वर्ष तक जीवें, सौ वर्ष तक देखें, सौ वर्ष तक सुनें और सुनावें। आयु पर्यन्त स्वाधीन बन कर जीवें और यदि आपके अनुग्रह से हमारी आयु सौ वर्ष से भी अधिक हो तो इसी प्रकार उत्तम कर्म करते रहें।

उपदेश

पाठको ! उपस्थान का अर्थ ईश्वर के निकट पहुँचना है। जो भक्त इन मन्त्रों का श्रद्धा से मनन करता है और अपने जीवन को पवित्र बनाता है, वह ईश्वर को अवश्य प्राप्त कर लेता है। इन मन्त्रों में यह शिक्षा दी गई है कि संसार की सब चीज़ों और सारे प्राणियों में सब से बड़ा

सबसे उत्तम और सबसे अधिक पूज्य ईश्वर ही है । इसलिये हमें सबसे अधिक भक्ति ईश्वर के प्रति ही दिखानी चाहिये ।

उसकी ज्योति सब पदार्थों में जगमगाती है । वृक्षों का पत्ता-पत्ता उसकी सत्ता का पता देता है । उसकी महिमा महान् है । वह प्रभु चर-अचर सब पदार्थों का स्वामी है । इसलिये हम सदा भक्तिपूर्वक प्रभु के चरणों में प्रार्थना करें कि हे भगवान् ! हम सौ वर्ष तक आपकी अद्भुत महिमा को देखें । सौ वर्ष तक आनन्द पूर्वक जीवें । सौ वर्ष तक महात्माओं के उपदेश सुनते रहें और दूसरों को सुनाते रहें । हमारी आत्मा इतनी बलवान् हो जावे कि हम सब प्रकार की दासता से छूट जावें और जब तक हम जीवें, हम कर्मवीर बन कर जीवें ।

गायत्री व गुरुमन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

भावार्थ—हे सच्चिदानन्द प्रभो ! आप जगत् के कर्त्ता, आदर के योग्य और पाप के हर्त्ता हैं । हम सदा आपके दिव्य

गुणों को धारण करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को सदा उत्तम मार्ग पर चलाइये।

उपदेश

पाठको! गायत्री का अर्थ है भक्त की रक्षा करने वाली, इसीलिए प्रभु भक्त इस मन्त्र का विशेष रूप से जप करते हैं। इस मन्त्र का दूसरा नाम गुरु मन्त्र भी है; क्योंकि यज्ञोपवीत संस्कार में गुरु अपने शिष्य को विशेष रूप से इस मन्त्र का उपदेश देते हैं। कारण यह है कि इस मन्त्र में प्रभु से जिस पदार्थ की याचना की गई है वह बुद्धि की शुद्धता है। शुद्ध बुद्धि से ही मनुष्य सब कामों मे सफल हो सकते हैं। बुद्धि के बिगड़ जाने पर मनुष्य कहीं का नहीं रहता। आपने पागलों को देखा होगा कि मनुष्य होते हुये भी मनुष्य जीवन से लाभ नहीं उठा सकते, उनको देख कर दया आती है। इसी लिए गुरुजन हमें उपदेश देते हैं कि हम प्रतिदिन दोनों समय गायत्री का जाप करें और ईश्वर से वर माँगें कि वह हमारी बुद्धि को सद्मार्ग पर चलावे।

नमस्कार मंत्र

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च, मयस्कराय च।
नमः शिवाय च, शिवतराय च॥

भावार्थ—शान्ति के सागर प्रभु को नमस्कार हो।
सुख के सागर प्रभु को नमस्कार हो।
शान्ति के दाता प्रभु को नमस्कार हो।
सुख के दाता प्रभु को नमस्कार हो।
कल्याणकारी प्रभु को नमस्कार हो।
तथा अत्यन्त कल्याणमय प्रभु को नमस्कार हो

प्रार्थना

(संध्या के आधर पर)

हे परम पिता परमेश्वर! हम सब नर-नारी आपके चरणों में बैठकर प्रार्थना करते हैं। आप हमारी उत्तम इच्छाओं को पूर्ण कीजिए। हम पर सदा सुख की वर्षा करते रहिए।

हमारा शरीर आज्ञा में रहे । इसके द्वारा हम सदा परोपकार के कार्य्य करते रहें । हमारी वाणी, प्राण, आँख, कान, नाभि, हृदय, कंठ, शिर और भुजायें बलवान् और पवित्र बनाइए । तभी हमारा यश इस संसार में बढ़ सकता है ।

हे जगदीश्वर ! आप दुखों को दूर करने वाले हैं । सुख स्वरूप और शक्ति के भंडार हैं । सत्य ज्ञान के प्रदान करने वाले हैं । आपने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए संसार की रचना की है, वेद रूपी ज्ञान दिया है । आप सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि बड़े-बड़े लोक लोकान्तरों को नियम पूर्वक चला रहे हैं ।

प्रभो ! आप सब दिशाओं में मौजूद हो, सब प्राणियों पर अपनी करुणाभरी दृष्टि रखकर उनकी रक्षा करते हो । अपने भक्तों को दुःख के बंधन से बचाते हो । हम आपके चरणों में बारम्बार नमस्कार करते हैं ।

भगवन् ! हमें परस्पर के लड़ाई झगड़ों से बचाइए, एक दूसरे के साथ ईर्ष्या-द्वेष से छुड़ाइए । आपके प्रेम

और भक्ति की विद्युत् हमें सब प्रकार की बुराइयों से बचाती रहे। हम अपने से लड़ाई झगड़ा करने वालों को सदा आपके न्याय पर ही छोड़ते रहें।

हे ईश्वर! हम अविद्या-अन्धकार से दूर होवें। संसार के सब पदार्थ आपकी सत्ता को दर्शाने के लिये रंग बिरंगी झंडियों का काम दे रहे हैं। आपके सुख स्वरूप को देखते हुए हम अपने चरित्र को बहुत ऊंचा बनावें ताकि अंत में हम आपकी परम ज्योति को प्राप्त करलें।

हे दयानिधे! आप विद्वानों में अनुपम और श्रेष्ठ हैं। सबके नेता और अग्रसर हैं। हम सदा आपके पीछे चलें, आपकी आज्ञाओं का पालन करें। आपके बताये नियमों पर चलते हुए सौ वर्ष तक की लम्बी आयु भोगें। सदा आपके अनुग्रह में रहते हुए अपने जीवन-काल में उत्तम कर्म करते रहें।

हे सच्चिदानन्द प्रभो! आप सबसे अधिक आदर के योग्य हो। हम सदा आपके दिव्य गुणों का चिन्तन करें, उनको धारण करें तथा उनका आचरण करें। आप हमारी बुद्धियों को सदा उत्तम मार्ग पर चलाइए।

शान्ति के सागर प्रभु को नमस्कार हो !
सुख के सागर प्रभु को नमस्कार हो !
शान्ति के दाता प्रभु को नमस्कार हो ।
कल्याणकारी प्रभु को नमस्कार हो !
नमस्कार हो !! नमस्कार हो !!

इति शम्।

प्रार्थनोपासना मंत्र

ओं विश्वानि देव सवितर्,
दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ १ ॥

ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे,
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्या मुतेमां,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छाया ऽमृतं यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक,
इद्राजा जगतो बभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

ओं येन द्यौ रुग्रा पृथिवी च दृढा,
येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो,
विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु,
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

ओं स नो बन्धुर्जनिता स विधाता,
धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृत मानशाना—
स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो,
भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

* * *

ब्रह्म-स्तोत्र

नमस्ते सते ते जगत कारणाय,
नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमो ऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं,
त्वमेकं जगत् पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकं जगत् कर्तृ पातृ प्रहर्तृ,
त्वमेकं परं निश्चलंनिर्विकल्पम् ॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां,
गतिःप्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं,
परेषां परं, रक्षणं रक्षणानाम् ॥
वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो,
वयं त्वां जगत् साक्षिरूपं नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्ब मीशम्,
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥
न तस्य कश्चित् पतिरस्ति लोके,
न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम् ।
स कारणं कारणा धिपाधिपो,
न चास्यकश्चित् जनिता नचाधिपः ॥

तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्,
तं देवतानाँ परमं हि दैवतम् ।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्,
विदाम देवं भुवनेश मीड्यम् ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
न सदृशे तिष्ठति रूपमस्य,
न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् ।
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनं,
एवं विदु स्मृतास्ते भवन्ति ।
न तस्य कार्य्यं करणं च विद्यते,
न तत्समश्चा भ्यधिकश्च दृश्यते ।
परास्य शक्ति र्विविधैव श्रूयते,
स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च ॥
अपाणिपादो जवनो ग्रहीता,
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता,
तमाहु रग्र्यं—पुरुषं महान्तम् ।

ओ३म भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री प्रार्थना

सर्वेश बल भंडार हो, सब सृष्टि सिरजन हार हो।
हृदयेश मम जीवन तरणि के आप खेवन हार हो।
संसार के जंजाल में शुभ मार्ग जब दीखे नहीं।
कौनसा कर्तव्य है, यह बुद्धि को सूझे नहीं।
उस समय प्रेरक प्रभो मैं भर्ग तेरा माँगता।
तू दया कर दे मुझे जो तेज तुझ से चाहता।
मैं चलूंगा अनवरत उस मार्ग पर हरि आन से।
राह पर मुझ को मिलेगा तेज नित नित आप से।
धर्म मिलता जायगा भ्रम नाश होते जायंगे।
बुद्धि खिलती जायगी, सन्देह मिटते जायँगे;
कर्तव्य पथ का ज्ञान होता जायगा इस तेज से।
मुक्ति मिलती जायगी संसार के बंधेज से।
मैं खिलौना बन रहूँगा हाथ में हरि आप के।
संकेत पर बैठूं उठूं नाचूं हँसूंगा आप के।
ध्येय पर चलना बनेगा, भ्रांति सब मिट जायगी।
आप के दर्शन मिले तो आश सब पुज जायगी।

× × ×

भजन १

तुम हो प्रभु चाँद मैं हूँ चकोरा।
तुम हो कमल फूल, मैं रस का भौंरा ॥१॥
ज्योति तुम्हारी का मैं हूँ पतङ्गा।
आनन्द घन तुम हो, मैं वन का मोरा ॥२॥
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति।
आकर्षण करे मोहे लगातार तोरा ॥३॥

पानी बिना जैसे हो मीन व्याकुल ।
ऐसे ही तड़पाय तोरा विछोड़ा ॥४॥
इक बूंद जल का मैं प्यासा हूँ चातक ।
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा ॥५॥

× × ×

भजन २

अपनी उपासना अपना ही जाप ।
सिखाओ प्रभु पूजा की बिधि आप ॥१॥
शिक्षा हमारी तुम्हारे हो आधीन,
मैं हूँ बाल बुद्धि तुम हो ज्ञानी बाप ॥२॥
प्रीति की रीति बता दीजे हमको,
कि जिस विधि होवे तुम्हारा मिलाप ॥३॥
तुम्हारी कृपा की नहीं कोई सीमा ।
नहीं तेरी करुणा का कोई तोल नाप ॥४॥
तन की तपत और मन की आपत को ।
मिटाओ मिटाओ प्रभु तीन ताप ॥५॥
करें तेरी आज्ञा का पालन सदा हम ।
कर न सकें हम कभी कोई पाप ॥६॥
वृथा जाता है जन्म जिनका भजन बिन ।
यह चलते करेंगे महा पश्चाताप ॥७॥
"अमी" रस की वर्षा वहाँ क्यों न होवे ।
जहाँ तेरा होवे मनोहर अलाप ॥८॥

× × ×

आरती

जय जगदीश हरे पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥२॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ॥३॥
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥४॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता।
दीन दयाल कृपालु कृपा करो भर्त्ता ॥५॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति।
शुद्ध करो मम हृदय, धर्म में होवे गति ॥६॥
दीन बन्धु दुःख हर्त्ता तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥७॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति, बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥८॥

× × ×